।। ग्यान गोष्ट को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

*

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| ग्यान गोष्ट को अंग ||

अथ संत सुखरामजी और हरकिशनजी रो संमाद लिखंते ||

चोपाई || हरकिशनजी वाच ||

हो जन मे बुजत हुँ भेवा || किरपा कर कहिये गुर देवा ||
अे पांचू तत्त कांहा सुं होई || तां का भेव कहो गुर मोई || १ ||

हरकिशनजी ने ये पाँच तत्व कहाँ से आये इसका भेद मुझे बताईये । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज को बोला । ||१||

श्री सुखोवाच ||

हे सिष पार ब्रम्ह परमातम देवा || तां सुं तत्त ऊपज्या भेवा ||
पीछे मन्ड सकल बिस्तारा || ओऊँ सोऊँ सबे पसारा || २ ||

हे शिष्य पारब्रम्ह परमात्मा देव है उससे पाँच तत्व उत्पन्न हुए ये तत्व उत्पन्न होने के बाद सारी सृष्टि का तथा ओअम् और सोहं सब का पसारा हुआ । ||२||

सिष वाच ||

हो स्वामीजी ओऊँ शब्द कहाँ सुं होई || ता का भेव कहो गुर मोई ||
केसी सिष्ट जीव उपजाया || पाँच तत्त केसे कर कुवाया || ३ ||

शिष्य ने कहा हे स्वामीजी यह ओअम् शब्द कहा से आया । यह सृष्टि कैसे बनायी और जीव कैसे उपजाया और ये पाँच तत्व कैसे कहलाये । इसका भेद मुझे बताईये ||३||

श्री सुखो वाच ||

हे सिष परापरी प्रब्रम्ह कहावे || ता सुं देव निरंजण गावे ||
सो आकास के तत्त भाया || बाय तत्त सो ओऊँ कुवाया || ४ ||

गुरू बोले हे शिष्य परापरी याने पहले के भी पहले पारब्रम्ह कहलाया उससे निरंजन देव उत्पन्न हुआ वह आकाश के तत्व से उत्पन्न हुआ और वायु से ओअम् हुआ । ||४||

सिष वाच ||

ओऊँ शब्द कहाँ का होई || तां का भेव कहो गुर मोई ||
केसे बन्ध्या कोण बिध साई || अे सब सकळ जीव के माई || ५ ||

शिष्य बोला कि यह ओअम् शब्द कहाँ का हुआ यह कैसे बांधा और किस विधी से बांधा यह सभी जीवों के अन्दर,कैसे,कौनसी रीती से बांधा गया । इसका भेद आप गुरूजी मुझे बताओ । ||५||

श्री सुखो वाच ||

हे सिष परा ब्रम्ह से ब्रम्हंड होई || ता सुं बाय ऊपज्यो सोई ||
तेज तत्त पवन उपजायो || सो निरंजण रूपी देव कुवायो || ६ ||

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने कहा कि हे शिष्य पारब्रम्ह से यह ब्रम्हाण्ड हुआ उस ब्रम्हाण्ड याने आकाश से वायु उत्पन्न हुआ वायु से यह अग्नी याने निरंजन देव बना । ||६||

हे सिष तेज तत्त सुं तोय होई ।। ता सुं मही धरण आ जोई ।।
अेसे तत्त पांच अे हुवा ।। हे सिष गुण सुं कहिये जुवा ।। ७ ।।

हे शिष्य,इस अग्नी तत्व से,जल उत्पन्न हुआ और उस पानी से यह धरती उत्पन्न हुयी इस प्रकार से ये पाँच तत्व उत्पन्न हुए वे अपने–अपने गुण के प्रमाण से अलग–अलग हुए । ।।७।।

स्याम रंग ब्रेहमंड को जोई ।। लिलो रंग बाय सूं होई ।।
जो ओ लाल दिखावे भाई ।। तेज तत्त सुं उपज्यो आई ।। ८ ।।

हे शिष्य काला रंग आकाश से हुआ और यह हरा रंग वायु से हुआ और यह जो लाल रंग दिखाई देता है वह अग्नीसे उत्पन्न हुआ । ।।८।।

हे सिष सेत रंग तोय सुं होई ।। पीलो रंग धरण सुं जोई ।।
अे पांचू रंग सिष्ट मे भाया ।। तत्त सुं उपज जक्त मे आया ।। ९ ।।

हे शिष्य सृष्टि में सफेद रंग पानी से उत्पन्न हुआ और पीला रंग धरती(पृथ्वी)से उत्पन्न हुआ इस तरह से पाँचो रंग,पाँचो तत्वों से उत्पन्न हुए । ।।९।।

सिष वायक ।।

हो स्वामीजी तत्त का रंग कहया तम सोई । पण खट रस साव का हा का होई ।
या को भेव कहो गुर राया ।। केसे सब अे बास उपाया ।। १० ।।

शिष्य ने कहा कि हे स्वामीजी,ये पाँच तत्व और पाँचो तत्वों के रंग आपने सब बताया । परन्तु छः रसों का स्वाद किससे बना?और कैसे इनके रहने का स्थान उत्पन्न किए । गुरूराय इसका भेद मुझे बताईये ।।१०।।

श्री सुखो वाच ।।

हे सिष ब्रम्हंड तत्त कहिजे भाया ।। कडवा साव वहां ते आया ।।
बाय तत्त सुं खाटा होई ।। तेज तत्त सुं चरका जोई ।। ११ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने ने कहा कि हे शिष्य आकाश तत्व कहते है उस आकाश से कडवा स्वाद उत्पन्न हुआ है और वायु तत्व से खट्टा स्वाद उत्पन्न हुआ । और अग्नी तत्व से तिखा स्वाद उत्पन्न हुआ है । ।।११।।

हे सिष फिका साव अप सुं जाणो ।। मिठा धरणी मही बखाणो ।।
पांचू साब मिले तब भाई ।। छटो साब अनोप कुवाई ।। १२ ।।

और फिका स्वाद पानी से उत्पन्न हुआ । मीठा स्वाद धरणी यानी पृथ्वी से उत्पन्न हुआ । इस तरह से पाँचो रसों में,एक या दो,या,तीन या चार,एक दूसरे में मिलने पर,छठवा अनूप याने जिसकी उपमा नही दी जा सकती ऐसे एक में एक या अनेक मिश्रण करने पर छठवाँ स्वाद बन जाता है । इस प्रकार से छः रसों का छः स्वाद बताया । ।।१२।।

सिष वायक ।।

हो स्वामाजी खट रस साव भेव तम दिया ।। अेसे बण्या इसी बिध किया ।।

अे हम भेव सुणे सुख पाया ।। अब मे या बूजू गुर राया ।। १३ ।।

हे स्वामीजी छः रसों के स्वाद का भेद आपने कैसे बने और कैसे बनाये यह भेद बताया यह भेद सुनकर मुझे सुख मिला आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज मै आपसे और भी पूछता हूँ । ।।१३।।

हो स्वामीजी प्रगत पाँच बिष बीस किम होई ।। तां को भेव कहो गुर मोई ।।
भिन भिन कर निर्णा सब दिजे ।। या का अर्थ खोल गुर कीजे ।। १४ ।।

हे स्वामीजी पच्चीस प्रकृती कैसे बनती है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज इसका भेद मुझे बताईये । इसका सब भिन्न–भिन्न करके सभी निर्णय मुझे दिजीए । इसका अर्थ प्रगट करके मुझे बताईये ।।।१४।।

श्री सुखो वाच ।।

नाड़ि रोम तुचा सुण भाई ।। मेद अस्त बण्या बिध मांई ।।
अे प्रगत पांचू सुण भाई ।। मही तत्त सुं उपजे आई ।। १५ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने कहा कि नाड़ी,केश,त्वचा,मांस और हड्डी ये पाँच प्रकृती पृथ्वी तत्व से बनी हुयी है । ।।१५।।

हे सिष थूक लाळ मुत्र ओ कहिये ।। लोहिबिन्द पसेव रहिये ।।
अे पांचू प्रगत सुण भाई ।। तोय तत्त सुं उपजे मांई ।। १६ ।।

खून,पसीना,मुत्र,वीर्य और लार ये पाँच प्रकृती जल तत्व से उत्पन्न हुए है । ।।१६।।

हे सिष तिरषा नींद कामना जागे ।। खुद्या आलस देह तन भागे ।।
अे प्रगत पांचू सुण भाई ।। तेज तत्त सुं उपजे मांई ।। १७ ।।

और नींद,जम्हाई,आलस,भूख और प्यास ये पाँच प्रकृती अग्नी तत्व से उत्पन्न हुए है ।।१७।।

हे सिष गावण लडण दोड़ बोहो होई ।। ऊँची हाक ख्याल करे कोई ।।
अे प्रगत पांचू सुण भाई ।। वाय तत्त से ऊपजे मांई ।। १८ ।।

और दौड़ना,पसारना(खेलना,गाना जोर से हाँक देना),संकोचना और फिक्र ये पाँच प्रकृती,वायु तत्व से बने हुए है । ।।१८।।

हे सिष राग धेक अे डींभ कुवावे ।। पकडे मून मोहो घट आवे ।।
अे प्रगत पांचू सुण भाई ।। ब्रेमंड सुं उपजत आई ।। १९ ।।

काम,क्रोध,(राग,द्वेष)मोह,लोभ,दंभ ये पाँचो प्रकृती,आकाश तत्व से उत्पन्न हुए । ।।१९।।

अे तत्त पांच सुणाया तोही ।। तिन की अे प्रगत ही होई ।।
इण को ठाट सबे सुण साई ।। तिनु चवदे लोक कहाई ।। २० ।।

ये पाँच तत्वो की पच्चीस प्रकृती तुम्हे बताया । यह पाँच तत्वों की पच्चीस प्रकृतीयों का सब थाट है । पाँच तत्व और पच्चीस प्रकृती का तीन लोक चौदह भुवन है । ।।२०।।

सिष वायक ।।

हो स्वामीजी अे तम भेद बहोत बिध दिया ।। भांत भांत कर निर्णा किया ।।
अब मे या बुजू गुर सोई ।। देह अस्थूल कांहा को होई ।। २१ ।।

शिष्य ने कहा कि हे स्वामीजी यह भेद आपने बहुत तरह से बताया । सभी कई तरह से निर्णय किया । अब गुरूजी मैं यह पूछता हूँ कि यह स्थूल देह कैसे बनाता है । ।।२१।।

श्री सुखो वाच ।।

हे सिष सरब धात की आ देह होई ।। जो अस्थुल बण्यो हे सोई ।।
जेती देह दिष्ट में आवे ।। सो सब सांतु धात कुवावे ।। २२ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने बोले कि हे शिष्य रस,रक्त,मांस,मेद, मज्जा,अस्थी,रेत इन सात धातुओं की यह स्थूल देह बनती है । जितनी देह दिखाई देती है वे सभी सात धातुओं की बनी हुयी है । ।।२२।।

सिष वाच ।।

हो स्वामीजी सात धात काहां की होई ।। ताको भेव कहो गुर मोई ।।
कसें जीव आत्मा सांई ।। सो गुर भेद कहो मुज तांई ।। २३ ।।

शिष्य ने कहा कि हे स्वामीजी ये सात धातु किससे बनते है इसका भेद आप मुझे बताईये । और यह जीव किससे बनता है यह सभी भेद मुझे बताईये । ।।२३।।

श्री सुखो वाच ।।

नाड़ी रोम तुचा सुण भाई ।। मेदा अस्त बण्या अे मांई ।।
अे पांचू धात मही सुं होई ।। हे सिष ओर बताऊँ तोई ।। २४ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने कहा कि हे शिष्य,नाड़ी,केश,मेद और अस्थी जो शरीर में बने हुए है,ये पाँचो धातु पृथ्वी से बने हुए है । हे शिष्य और भी तुझे मैं बताता हूँ । ।।२४।।

हे सिष लोई बिंद धातत्रे जाणो ।। अप तत्त सुं ओ पत ठाणो ।।
सातुं धात बणी ये सोई ।। दोय तत्त सुं प्रगट होई ।। २५ ।।

हे शिष्य रक्त और वीर्य ये दो धातु जल तत्व से उत्पत्ती हुयी है । इसप्रकार ये सातों धातु पृथ्वी व जल ऐसे दो तत्वो से उत्पन्न हुए है । ।।२५।।

हे सिष देह अस्थुल बण्यो ओ भाई ।। पांचू तत्त बिराजे मांही ।।
अेसो जीव आत्मा कहिये ।। जेसे नाम रूख को लहिये ।। २६ ।।

हे शिष्य,इस स्थूल शरीर में पाँचो तत्व है । ये सात धातु दो तत्वो से उत्पन्न हुए है । ये सभी जीव आत्मा ही है जैसे वृक्ष का नाम अलग-अलग रहता है । वैसे ही आत्मा का भी नाम अलग-अलग है । ।।२६।।

सिष वाच ।।

हो स्वामीजी ओ तम भेद कहयो समजाई ।। अेसो जीव आत्मा कुवाई ।।
अब मै या बूजुं गुर देवा ।। काया माय कहो तत्त भेवा ।। २७ ।।

हे स्वामीजी यह भेद आपने मुझे समझाकर बताया । ये सभी जीव आत्मा है । अब मैं हे गुरूदेवजी इस शरीर में पाँच तत्व आपने बताया तो उसका भेद मुझे बताईये । ।।२७।।

हो स्वामीजी कहां कहां द्वार आर सो सांई ।। कहां कहां तत्त बिराजे मांहि ।।
ताको भेव बिध कर कहिये ।। को को आहार कोण बिध लहिये ।। २८ ।।

हे स्वामीजी कहाँ–कहाँ इन तत्वोंका द्वार है और ये तत्व शरीर में कहाँ–कहाँ रहते है । इसका भेद और विधी अलग–अलग करके बताईये । कौन–कौनसा आहार किस विधी से लेता है । यह खोल खोल के बताईये । ।।२८।।

श्री सुखो वाच ।।

हे सिष मही तत्त को ओ घर भाई ।। सोळे पांख कंवळ कंठ मांही ।।
सब रस साव प्रख के न्यारा ।। मुख दर्वाजा सोभ बिचारा ।। २९ ।।

गुरू ने कहा कि हे शिष्य पृथ्वी तत्व का घर,कंठ में है वहाँ सोलह पंखुड़ीयों का कमल है । वहाँ कंठ में सभी रसों का स्वाद अलग–अलग परखा जाता है । मुँख के दरवाजे से,जो कुछ भी खाया जाता है,जो मुँख से खाते है उसका रस कंठ में परखा जाता है । ।।२९।।

हे सिष पवन तत्त नाभ घर जाणो ।। बासा आहार घ्राण मुख ठाणो ।।
आछी बुरी न्याव कर देवे ।। पवन आहार बास को लेवे ।। ३० ।।

हे शिष्य,पवन तत्व का घर नाभी में है । इसका आहार सुगन्ध लेना है । उसका मुँख नाक है । अच्छी सुगन्ध और बुरी दुर्गन्ध की परख नाक में होती है । नाक यह पवन सूंघने का आहार करता है । ।।३०।।

हे सिष तेज तत्त हिये घर जाणो ।। अे मुख नेण रूप सब खाणो ।।
कर बोपार इसी बिध भाई ।। रूप करूप कहे सम जाई ।। ३१ ।।

हे शिष्य तेज तत्व का घर हृदय में है । इसका दरवाजा आँखे है । आँखो से सब रूप देखना ही इसका आहार है । इस तरह से रूप और कुरूप देखने का व्यापार करके रूप और कुरूप समझ लेता है । ।।३१।।

हे सिष तोय तत्त भ्रुगटी जाणो ।। ईन्द्री मुख भग आहार बखाणो ।।
त्रीया संग बोहोत सुख पावे ।। बिन्द छुटे सो द्वार कुवावे ।। ३२ ।।

हे शिष्य जल तत्व का घर भृगुटी है ऐसा समझो । इंद्रिय के मुँख से,स्त्री के भग का भोग करना यह इंद्रिय का आहार है,स्त्री के संग में यह आहार लेनेसे लिंग को,बहुत सुख मिलता है भृगुटी से वीर्य छूटता है लिंग उसका दरवाजा है । ।।३२।।

हे सिष धूर आकास तत्त को भाई ।। ब्रम्हंड मांय बण्यो घर जाई ।।
सरवण मुख सा अणंद अहारा ।। बाचा ग्यान सुणे सब धारा ।। ३३ ।।

हे शिष्य आकाश तत्व का घर कान है । कान का मुँख आकाश तत्व का दरवाजा है । कान के मुँख से शब्द सुनकर शब्द का आनन्द लेना यह इसका आहार है । कान से सभी

वचन और ज्ञान सुनकर धारण कर लेता है । ।।३३।।

हे सिष पांचु तत्त कहया मे तोई ।। आगे लार केण मे होई ।।
पण अे घर द्वार इसि बिध भाया ।। सो मे तो कुं बरण बताया ।। ३४ ।।

हे शिष्य ये पाँच तत्व मैंने तुम्हे बताया । ये पाँच तत्व कहने में आगे–पीछे हुए है परन्तु तत्वों के ये घर और तत्वों के ये दरवाजे इस विधी से है जिसे मैंने वर्णन करके तुम्हे बताया । ।३४।

सिष वाच ।।

तत्त का आहार द्वार सब भाख्या ।। ता मे कछु सनेह न राख्या ।।
अब मे या बुजू गुर राई ।। प्रगत आहार काहा ले खाई ।। ३५ ।।

शिष्य ने कहा कि हे स्वामीजी तत्व का आहार और तत्व के दरवाजे आपने सब बताया । यह कहने में कोई भी संदेह नही रखा । अब में गुरूराय आपसे यह पूछता हूँ कि ये प्रकृती जो है वे किसका आहार करती है । ।।३५।।

श्री सूखो वाच ।।

हे सिष असत आहार चोलण को कहिये ।। मेदा आहार धावणो सहीये ।।
तुचा नावण केस सुलझाया ।। नाड़ी आहार हुलसण भाया ।। ३६ ।।

हे शिष्य अस्थी आहार रगड़ने का लेती है और मेद का आहार दाबना का लेता है । त्वचा का आहार नहाना–धोना,साफ रखना है और केश का आहार कंघी से साफ करना है । नाड़ी का आहार उल्हास आना है । ।।३६।।

मुत्र आहार खोल बोहो होई ।। षट पण अहार थूक को सोई ।।
प्रसवे को बाय कुवावे ।। लाळ अहार धुप ले खावे ।। ३७ ।।

और मुत्र का आहार पेशाब करना है पसीने का आहार हवा है और लार का आहार धूप है । ।।३७।।

हे सिष बिंद को ओ सुण भाई ।। त्रीयां कंवळ रस ले जाई ।।
अे पाँचु तत्त त्यारग बिस्तारी ।। तोय तत्त सूं उपजण हारी ।। ३८ ।।

हे शिष्य स्त्री के कमल से रस खींचकर गर्भ में ले जाने का बिन्दु का आहार है । ये पाँचो तत्व त्यारग ( ) विस्तारे हुए है । ये जल तत्व से उपजने वाले है । ।।३८।।

हे सिष खुद्या आहार अन्न को लेवे ।। तिरषा आहार जाण निर जल देवे ।।
निद्रा आहार सोवणो भाई ।। आलस लात काम उठाई ।। ३९ ।।

हे शिष्य भूख–अन्न का आहार लेती है और नींद–सो जाने का लेती है । आलस का आहार–आते ही करता हुआ काम बंद करके उठा देता है । ।।३९।।

हे सिष चेतन प्रगत को सुण भाई ।। म्हेरी संजम सुंई सुख पाई ।।
अे प्रगत पांचु बिस्तारी ।। तामस तत्त सुं ऊपजे सारी ।। ४० ।।

हे शिष्य चैतन्य का आहार ,स्त्री के संगम से प्रगटता है सभी तरह के इंद्रिय सुख मिलता

है । इन पाँचो प्रकृती का विस्तार तामस तत्व से याने अग्नी तत्व से उसमे उत्पन्न होते है ।।४०।।

हे सिष गवण आहार अरथ को होई ।। धावण दोड़ जमीयां सोई ।।
लडवे कुं मानव आहारा ।। सामा बचन सुणावण हारा ।। ४१ ।।

हे शिष्य गवण गाँव में जाना,चलना यह आहार अर्थ याने मतलब का है और दौड़ना यह जमीन का आहार लेता है । और झगड़ा करने वाला मनुष्य रहा,सामने झगडे के वचन बोलने वाला रहने पर लड़ाई करके आहार लेता है । ।।४१।।

हे सिष खिलवा को ओ हे अहारा ।। मांगे चिज अरथ बिस्तारा ।।
मून गेण को ओ सुण भाई ।। लेवे अहार ज्ञान को माही ।। ४२ ।।

हे शिष्य,वस्तु माँगता है और विस्तार करके बताता है,यह आहार प्रफुल्लीत होने का खिलवा का आहार है । घट के अन्दर ज्ञान का आहार लेता है । यह भी खिलवा का आहार है । ।४२।

हे सिष अे पाँचु प्रगत बिस्तारी ।। बाय तत्त से उपजण हारी ।।
अब मे सुण ब्रहमंड की भाखूं ।। तो सुं दुज कछु नई राखूं ।। ४३ ।।

हे शिष्य,इन पाँचु का तत्व विस्तार वायु तत्व से उपजा है । अब तुम सुनो । मैं ब्रम्हाण्ड याने आकाश तत्व की बताता हूँ । तुझसे दूसरा विचार याने बताने मे अंतर मैं कुछ नही रखता हूँ । ।।४३।।

डिंभ प्रगत अे लेत आहारा ।। दावा मुद केहे मुख सारा ।।
मोहो प्रगत माया सुख से वे ।। हिंयाळी आहार नित्त प्रत लेवे ।। ४४ ।।

दावे–मुद्दा मुँख से सब बताना । यह दंभ प्रकृती का आहार लेती है । मोह प्रकृती माया सुख सेवन करती है और हियाली याने आश्वासन यह आहार दंभ प्रकृती नित्य प्रती लेता है ।।४४।।

हे सिष प्रगत आहार ओ लेवे ।। निरसा बचन छांट सब देवे ।।
धेक आहार इन का ले आई ।। खसा खुन करता रे भाई ।। ४५ ।।

हे शिष्य प्रकृती आहार लेते समय निरसे याने हलके वचन सब छाँटकर अलग कर देती है व धींगा मस्ती करते । हलके वचनो का आहार द्वेष प्रकृती लेती है । ।।४५।।

हे सिष अरू भाव प्रगत आ भाई ।। लेवे आहार दुख को मांई ।।
अे प्रगत सुण लिजे भाया ।। पांचू बीस रहे इण काया ।। ४६ ।।

हे शिष्य भाव प्रकृती तन के अन्दर दु:ख का आहार लेती है । हे शिष्य,ये सभी पच्चीस प्रकृतीयाँ,इस शरीर में रहती है यह सुन लो । ।।४६।।

सिष वाच ।।

हो स्वामीजी प्रगत खज कहया सब भेवा ।। अब मे या बुजूं गुर देवा ।।

मनसो चित्त ज्ञान ओ कुवावे ।। केरा बण्या कहां सु आवें ।। ४७ ।।

शिष्य बोला कि हे स्वामीजी प्रकृती के खाद्य का याने खाने की वस्तु का सभी भेद मुझे बताया । अब और भी मैं यह पूछता हूँ कि मन,चित्त और ज्ञान कहते है,ये तीनो किससे बने और कहाँ से आते है । ।।४७।।

श्री सुखो वाच ।।

मही तत्त ओ मन ही होई ।। तोय चित्त उपजे सोई ।।
ओ बिचार तेज सुं भाया ।। अणभे ग्यान बाय सुं आया ।। ४८ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने कहा कि यह मन पृथ्वी तत्व का बना हुआ है और चित्त जल तत्व से बना हुआ है । और यह विचार याने ज्ञान अग्नी तत्व से बना हुआ है और अणभय ज्ञान वायु तत्व से आया हुआ है । ।।४८।।

सिष वाच ।।

हो स्वामाजी सुरत निरत आ बुद्ध कुवावे ।। केंरी बणी कहां सुं आवे ।।
फिर विग्यान कहो गुरू राया ।। केरां बण्या कहां सुं आया ।। ४९ ।।

शिष्य ने कहा सुरत और निरत तथा यह बुद्धि कहलाती यह किससे बनी और कहाँ से आती है और भी हे गुरूराय यह जो विज्ञान है वह किससे बना और कहाँ से आया यह भी बताइये । ।।४९।।

श्री सुखो वाच ।।

हे सिष सुरती बणी मही मे भाई ।। तोय तत्त निरत उपजाई ।।
या बुध जोय तेज सुं होई ।। प्रगत लारे बरते सोई ।। ५० ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने कहा कि सुरत यह,पृथ्वी तत्व से बनी है और जल तत्व ने निरत उत्पन्न किया । और यह बुद्धी अग्नी तत्व से बनी हुयी है । इस प्रकार से ये सब बनते है । ।।५०।।

हे सिष वो बिग्यान ऊपजे आई ।। सो ब्रम्हंड तत्त सुं बणीयो भाई ।।
इण आगे नही बार न पारा ।। ता सुं बणी या तत्त बिचारा ।। ५१ ।।

हे शिष्य यह जो विज्ञान आकर उत्पन्न होता है यह विज्ञान आकाश तत्व से उत्पन्न होता है । इसके आगे कोई वार–पार नही आता है । ऐसे ये तत्व बने हुए है । ।।५१।।

सिष वाच ।।

हो स्वामाजी अे सब ही तुम भेव बताया ।। सो मेरे अंतर मन भाया ।।
अब मे या बुजूं गुर सोई ।। अे आसा त्रिस्ना केरी होई ।। ५२ ।।

शिष्य ने कहा हे स्वामीजी आपने सब भेद बताया यह सब मेरे निजमन को भाया । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज अब मै तुमसे पुछ्ता हुँ आशा और तृष्णा किससे बने है । ।।५२।।

श्री सुखो वाच ।।

हे सिष महि तत्त की त्रिस्ना होई ।। ब्रेहमंड की आसा रहे कोई ।।

लालच लोभ अगन का भाई ।। ममता चाल वाय सुं आई ।। ५३ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने कहा,कि हे शिष्य तृष्णा पृथ्वी तत्व से बनती है और आशा आकाश तत्व से बनती है । लालच और लोभ अग्नी तत्वसे बने हुए है और ममता,वायु तत्वसे चलकर आती है । ।।५३।।

सिष वाच ।।

हो स्वामीजी अे तुम कही सुणी में सोई ।। मरे मन आणन्द घण होई ।।
अब मे या बूजुं गुर सोई ।। आ लज्जा रीस काहे की होई ।। ५४ ।।

शिष्य बोला कि हे स्वामीजी यह सब जो आपने बताया वो सब मैंने सुना अब मेरे मन में बहुत आनन्द हुआ । गुरूदेवजी यह लज्जा और रीस किससे बने है यह मै आपसे पुछ्ता हुँ ये आप बतावो । ।।५४।।

श्री सुखो वाच ।।

हे सिष लज्या सन श्रम सुंन भाई ।। अे तेज तत्त सुं उपजे आई ।।
चमके बिये डरे भै आवे ।। अे सब जाण तेज का कुवावे ।। ५५ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने कहा कि हे शिष्य,यह लज्जा,शंका और शर्म तथा जो चिहुँकता,डरता और भय उत्पन्न होता है० ये सभी अग्नी तत्व से बने है ।।।५५।।

हे सिष तामस रीस क्रोध ओ होई ।। तेज तत्त सुं उपज्या सोई ।।
आ दूर सासी कल्पना क्रावे ।। तेज तत्त सुं ये भी आवे ।। ५६ ।।

हे शिष्य तामस–तमोगुण,रीस,क्रोध ये सभी अग्नी तत्व से उत्पन्न होते है । यह लंबी सांस छोड़ना और कलपता मन ये सब अग्नी तत्व से उत्पन्न होते है । ।।५६।।

सिष वाच ।।

हो स्वामीजी ओ तम भेद बोहोत बिध भाक्यो ।। या मे भ्रम कछु नही राख्यो ।।
अब मे या बुजुं गुर सोई ।। अे शिलर साचा काहाँ का होई ।। ५७ ।।

शिष्य बोला कि हे स्वामीजी यह भेद आपने बहुत तरह से बताया । इसे बताने में कुछ भी भ्रम आपने नही रखा । गुरूजी यह शील याने ब्रम्हचर्य पूर्वक तथा एक पत्नीव्रत रहना और साँच याने विश्वास ये किससे बनते है । ।।५७।।

श्री सुखो वाच ।।

हे सिष सिलर साच ग्यान बिस्तारा ।। पवन तत्त सुं उपजण हारा ।।
ओ बमेष अेकता सोई ।। अे पवन तत्त की पैदा होई ।। ५८ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने कहा कि हे शिष्य शील साँच और ज्ञान का विस्तार यह सब वायु तत्व से उत्पन्न होते है यह विवेक विषमता तथा सब एकता याने समता ये सब भी वायु तत्व से उत्पन्न होते है ।।५८।।

सिष वाच ।।

हो स्वामाजी ओ नेटाव नेम घट होई ।। डर भै कदे न उपजे कोई ।।
अे कहिये गुर किण का होई ।। ता का भेव कहिजे मोई ।। ५९ ।।

शिष्य ने कहा कि हे स्वामीजी नेटाव याने धीर रखना और नियम घट में रखना और डर तथा भय कोई भी कभी भी उत्पन्न नही होना ये किससे बनते है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज आप इसका भेद मुझे बताईये । ।।५९।।

श्री सुखो वाच ।।

हे सिष ओ नेटाव गिगन सुं होई ।। मही तत्त को पण घट सोइ ।।
ओ चमके बिये डरे ना भाई ।। सो ब्रहमंड तत्त से उपज्यो आई ।। ६० ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने कहा कि हे शिष्य यह नेटाव याने धैर्य रखना आकाश तत्व से बना है । और नियम घट में रखना ये पृथ्वी से बने है और यह चिहुकता नही,भय नही मानता और डरता नही ये सब भी आकाश तत्व से उत्पन्न होते है । ।।६०।।

सिष वाच ।।

हो स्वामीजी अे तम भेव सरब मुज दिया ।। भांत भांत कर निर्णा किया ।।
अब मे या बुजुं गुर साई ।। कुण कुण वाय तत्त के माई ।। ६१ ।।

शिष्य बोला हे स्वामीजी यह सभी भेद का तरह-तरहसे आपने निर्णय किया । अब गुरू स्वामी यह मैं विचार करता हूँ कि,कौनसी-कौनसी वायु कौनसे तत्व में है,वायु चौरासी है,उसमें कौनसे तत्व में,कौनसी वायु है,उसे मुझे बताईये । ।।६१।।

श्री सुखो वाच ।।

हे सिष पवन ओ अेक ओर नही कोई ।। अे तत्त कर नांव निराला होई ।।
अेसे बाय पांच घट जाणो ।। चोरांसी धर नांव बखाणो ।। ६२ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने कहा कि हे शिष्य इन चौरासी वायु में पवन यह एक ही है पवन के अलावा वायु में दूसरा कोई भी तत्व नही है । ये सभी पांच तथा चौरासी वायु घट मे उत्पन्न होते ही है । ।।६२।।

सिष वाच ।।

हो स्वामीजी कुण कुण बाय पांच अे होई ।। ता का नांव कहो गुर मोई ।।
क्युं कर बसे ऊपजे माई ।। न्यारा नांव कहो गुर साई ।। ६३ ।।

शिष्य बोला हे स्वामीजी ये पाँच वायु कौनसी है तथा इन पाँचो वायु का नाम मुझे बताईये?ये वायु शरीर में किस तरह से रहते है और किस तरह से उत्पन्न होते है इनका अलग-अलग नाम आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज आप बताईये । ।।६३।।

श्री सुखो वाच ।।

हे सिष धनंजय नाग देव दत्त भाई ।। किर कल कोरम कहिये माही ।।
अे पांचु वाय नांव निज जाणो ।। यां लारे छतीस बखाणो ।। ६४ ।।

गुरू बोले कि हे शिष्य धनंजय,नाग,देवदत्त कुर्म,क्रुकल ये पाँच वायु शरीर में है । इन पाँच वायु के पीछे छत्तीस वायु है । ।।६४।।

सिष वाच ।।

हो स्वामीजी पांचु बाय नांव के दिया ।। निर्णा गुरू बहोत बिध किया ।।
अब मे या बुजुं गुर आई ।। कोहो तत्त से उपजे कुण वाई ।। ६५ ।।

शिष्य ने कहा कि हे स्वामीजी आपने पाँच वायु के नाम बता दिए गुरूजी आपने निर्णय बहुत तरह से किया । अब मैं,हे गुरूजी,यह पूछता हूँ कि किस तत्व से कौनसी वायु उत्पन्न होती है । ।।६५।।

श्री सुखो वाच ।।

हे सिष मही तत्त की धनंजय होई ।। तोय माय नाग सुख जोई ।।
किरकल जाण तेज सुं आवे ।। बाय तत्त की कोरम कुवावे ।। ६६ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने कहा कि हे शिष्य धनंजय वायु पृथ्वी तत्व की है और जल तत्व से नाग वायु उत्पन्न होती है । क्रुकल वायु अग्नी तत्व से आती है । और वायु तत्व की कुर्म वायु है । ।।६६।।

हे सिष देव दत्त ब्रहमंड की भाई ।। तेज तत्त सुं उपजे आई ।।
अे पांचु वाय कही मे तोई ।। तत्त तत्त सुं ऐसे होई ।। ६७ ।।

हे शिष्य देवदत्त वायु आकाश तत्व की है । यह अग्नी तत्व से उत्पन्न होती है । ये पाँचो वायु मैंने तुम्हे बताया,तत्व-तत्व से,इस प्रकार से होते है । ।।६७।।

सिष वाच ।।

हो स्वामीजी तत्त तत्त की सोज बताई ।। मेरो भ्रम गिऱ्यो भो मांई ।।
अब मे या बुजुं गुर सोई ।। अे उपज्या किम जाणे कोई ।। ६८ ।।

शिष्य बोला कि हे स्वामीजी, आपने तत्व-तत्व की खोज कर बताया । जिससे मेरा भ्रम भाग गया । गुरूजी यह मैं पूछता हूँ कि ये वायु उत्पन्न हुए इसे कोई किस तत्व से कौनसा वायू उत्पन्न हुआ यह कैसे समजेगा ? ।।६८।।

श्री सुखो वाच ।।

हे सिष नाग बाय तन उपजे आई ।। अब ओ प्राण डकारे भाई ।।
कोरम से फरके चख तेरा ।। किर कल छींक उछारे झेरा ।। ६९ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने कहा कि हे शिष्य,शरीर में जब नाग वायु उत्पन्न होती है तब डकार आती है । और कुर्म वायु उत्पन्न होने पर आँखे फरफर करती है और क्रुकल वायु जब आती है तब छींक आने लगती है । ।।६९।।

हे सिष देव दत्त कीया बिध कुवावे ।। ओ तन भाँज उबासी आवे ।।
धनंजय सुं सुजे भाया ।। छुटे प्राण देह तन काया ।। ७० ।।

हे शिष्य देवदत्त वायु शरीर में आनेसे आलस आकर,जम्हाई आने लगती है । और धनंजय वायु के उत्पन्न होने पर,शरीर फूलने लगता है और धनंजय वायु उत्पन्न हुयी यानी यह प्राण अब जायेगा मतलब शरीर छूटेगा ।(धनंजय वायु उत्पन्न हो जाने पर शरीर छुटने का किससे भी नही रुकता है ।) ।।७०।।

सिष वाच ।।

हो स्वामीजी धिन हो आप जुग के मांही ।। मोपे महिमा कही न जाई ।।
तुम तो मोय दिखावो अेसा ।। द्वापुर माय ब्यास सुख जेसा ।। ७१ ।।

शिष्य बोला,हे स्वामीजी,आप संसार में धन्य हो । आप की महिमा मुझसे नही होती । आप तो मुझे ऐसे दिखाई देते है,जैसे द्वापर युग में वेद व्यास और सुखदेव मुनी हो गये । वैसा मुझे दिखाई देते हो ।(इसके उपर सेठसाहब राधाकिसनजी महाराज की टिप्पन्नी,सतगुरू सुखरामजी महाराज को,तो वेद व्यास और सुखदेव की पदवी देना,जैसे सार्वभोम राजा को,गाँव का ठाकूर कहने जैसी है ।) ।।७१।।

हो स्वामीजी फिर बुजुं आ गुर सांई ।। अेतो तत्त सदा घट मांही ।।
अे बायां तो फिरती सी आवे ।। खिन मे होय पलक मे जावे ।। ७२ ।।

हे स्वामीजी ये पाँचो तत्व तो हमेशा शरीर में रहते है परन्तु ये पाँचो वायु फिरते–फिरते,एकाध बार आते है । जैसे कभी,एकाध बार कुर्म वायु आने पर आँखे फरकने लगती है और कभी एकाध बार नाग वायु के आने पर डकार आने लगती है । एकाध बार क्रुकल वायु आने से,छींक आने लगती है । और एकाध बार,देवदत्त वायु आने पर आलस आकर,जम्हाई आने लगती है । और धनंजय वायु अन्त समय में,मरते समय आती है । ये वायु तो,हमेशा नही रहते है और ये पाँच तत्व तो,शरीर में हमेशा बने रहते है । पृथ्वी तत्व तो,शरीर में हमेशा रहता है । और उसी समय,पृथ्वी तत्व की धनंजय वायु,अंत समय में आती है । मरने से पहले,नही आती है । शेष चारों वायु कुर्म,क्रुकल,नाग,देवदत्त ये तो क्षण में आते और क्षण में चले जाते है परन्तु धनंजय वायु,मरने के बाद भी,शरीर में रहती है ।७२।।

हो स्वामीजी अे कहिये मो कुं सब भेवा ।। उपजे मिटे कुण बिध देवा ।।
या बिध मोय अंदेसो सांई ।। अे ऊपजे मिटे कुण बिध मांई ।। ७३ ।।

हे स्वामीजी इसका सभी भेद मुझे बताईये । तो स्वामीजी ये वायु किस तरह से उत्पन्न होती है और किस विधी से मिट जाते है इसकी मुझे समज देकर अंदेशा मिटावो । ।।७३।।

श्री सुखो वाच ।।

हे सिष अन जळ जोय मही तत्त पावे ।। पिण पुरण हुवे बाय चल आवे ।।
तेज तत्त दुखिया जब होई ।। तब आ बाय उपजे लोई ।। ७४ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले कि,हे शिष्य,अन्न जल पृथ्वी तत्व से मिलता है,पीण पूर्ण होता है,तब नाग वायु चली आती है । और अग्नी तत्व से जब दु:खी होता है तब कुर्म उत्पन्न होती है । ।।७४।।

हे सिष प्राण भूत कुं चिंता होई ।। फिर को याद करे नर लोई ।।
तब आ बाय चाल कर आवे ।। ब्रहमंड दुखी उबासी खावे ।। ७५ ।।

हे शिष्य,जब प्राण भूत को चिन्ता होती है तब यह कुर्म वायु चली आती है । आकाश तत्व से देवदत्त वायु चली आती है तब शरीर दूखने लगता है और जम्हाई आने लगती है ।।७५।।

हे सिष धनंतर बाय चाल तब आवे ।। जब ओ प्राण देह छिटकावे ।।
ता उरीया नही व्यापे भाई ।। या बिध ग्रब उपजे आई ।। ७६ ।।

हे शिष्य,जब धनंजय वायु आती है,तब यह प्राण शरीर को छोड़ता है । मरने तक धनंजय वायु शरीर मे नही आती है इस तरह से,ये सभी वायु उत्पन्न होते है । ।।७६।।

सिष वाच ।।

हो स्वामीजी अे तम श्रब कहया मुज भेवा ।। अब मे या बुजुं गुर देवा ।।
उपजत बांय इसी बिध सांई ।। पाछी मिटे कुण बिध मांई ।। ७७ ।।

शिष्य ने कहा कि हे स्वामीजी यह आपने सभी भेद मुझे बताया । अब मैं यह पूछता हूँ कि ये वायु तो उत्पन्न इस तरह से होती है परन्तु ये वायु शरीर में बाद में किस तरह से मिटती है । ।।७७।।

श्री सुखो वाच ।।

हे सिष धनं जय बांय मिटे इसी बिध भाया ।।
चिन्ता जाय सेंण सुख आया ।। ७८ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले की हे शिष्य धनंजय वायु तो मरने के बाद यह शरीर सूख जायेगा तब मिटेगी । और क्रुकुल वायु जब तेज याने गर्मी आकर लगेगा तब मिटेगी सर्दी लगने पर,छींक आने लगती है । उस पर गर्मी मिलने पर सर्दी चली जाती है और कुर्म वायु, मन की चिन्ता मिट जाती है और कोई सज्जन मिलने पर और मन को सुख आ जानेपर कुर्म वायु मिट जाती है । ।।७८।।

हे सिष देव दत्त अेसे मिट जावे ।। तेज तत्त प्रगत खुल आवे ।।
नाग बाय ऐसी बिध सोई ।। पावे अहार बर फळ कम होई ।। ७९ ।।

हे शिष्य,तेज तत्व से प्रकृती खुल जाती है जिससे आलस और नींद चली जाती है तब देवदत्त वायु,मिट जाती है और खाया हुआ आहार,पचकर गल जाता है तब नाग वायु,कम होकर मिट जाती है । ।।७९।।

सिष वाच ।।

हो स्वामीजी अे तम मो कुं भेव बताया ।। सो मेरे उर अन्तर आया ।।
अब मे या बुजुं गुर सांई ।। केसे आहार पचे तन मांई ।। ८० ।।

शिष्य ने कहा,कि,हे स्वामीजी,आपने मुझे यह भेद बताया । वह मेरे हृदय में आ गया है । अब मैं,स्वामीजी आपसे यह पूछता हूँ कि यह खाया हुआ आहार शरीर में कैसे पच जाता है । ।।८०।।

श्री सुखो वाच ।।

हे सिष सातु अंग न कहीजे भाई ।। सो जठरा अगन बसे तन माई ।।
ता सुं अहार पचत हे काया ।। ओ सुंण भेद अगन सुं भाया ।। ८१ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने कहा कि हे शिष्य,सात तरह की अग्नी कहलाती है उसमें से,जठराग्नी शरीर में रहती है । उस जठराग्नी से खाया हुआ,सभी आहार शरीर में गलकर पच जाता है । यह खाया हुआ अन्न,पचने का भेद,जठराग्नी मे है । ।।८१।।

सिष वाच ।।

हो स्वामीजी निगळे आहार पीवे जळ पाणी । ओ अद बिच कुण थोभे आणी ।।
ता को भेव कहो गुर राया ।। रूम रूम मे केसे जळ आया ।। ८२ ।।

शिष्य ने कहा कि हे स्वामीजी खाते समय अन्न एवम् पानी ग्रहना करता हुँ,उसे गला निगल लेता है । उसे गला गले में नही रोकता फीर आगे बीच में उसे कौन रोककर रखता है इसका भेद मुझे गुरूराय बताईये । पानी पेटमें पीता है,वह रोम–रोम से पसीनेके रूप में कैसे आता है ।।।८२।।

श्री सुखो वाच ।।

हे सिष अेक बायसुं निगळे भाई ।। दुजी बाय थोब दे मांही ।।
तीजी अहार चूस सब लेवे ।। चोथी छाँट मल सब देवे ।। ८३ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने कहा कि हे शिष्य एक वायु से खाया हुआ,अन्न पानी निगल लेता है और अन्दर दूसरी वायु,उस खाये हुए अन्न पानी को रोककर रखती है और तीसरी वायु,खाये हुए अन्न का रस चूस लेती है और चौथी वायु मल को छाँटकर सब अलग कर देती है । ।।८३।।

हे सिष मल कुं थोब रखे सुंण भाई ।। अे पाँचु बाय रहे तन मांई ।।
अेसे बुहार तन का जाणो ।। खावत पीवत सरब बखाणो ।। ८४ ।।

हे शिष्य और पाचवी वायु मल को रोककर रखती है । ये पाँचो वायु शरीर में अन्दर रहते है । इस तरह से,इस शरीर मे वायुके व्यवहार जाणो । खाने में पीने में इन सब में वायु का कार्य ऐसा है यह समझो ।।८४।।

सिष वाच ।।

हो स्वामीजी ये पाँचु बाय कहां ते होई ।। तां को भेव कहो गुर मोई ।।
को को बाय कुण घर बासा ।। सो सब भेव बतावो आसा ।। ८५ ।।

शिष्य बोला,कि,हे स्वामीजी,ये पाँचो वायु निगलनेवाली,रोकनेवाली,पचनेवाली,रस चूसनेवाली और मल छाँटनेवाली ये शरीर में कहाँ रहती है इसका भेद मुझे बताईये,कौन–कौनसी वायु, शरीर में किस–किस जगह पर रहती है इस सबका भेद,मुझे बताईये । ।।८५।।

श्री सुखो वाच ।।

हे सिष निगळण बाय तेज की भाई ।। ब्रहमंड की थोबत हे आई ।।

चुसण बाय पवन की जाणो ।। मळ छटण सोई तेज बखाणो ।। ८६ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने कहा कि हे शिष्य निगलने वाली वायु अग्नी तत्व से बनी है और आकाश तत्व की वायु आकर रोककर रखती है और रस शोषन करनेवाली वायु,वायु तत्व से उत्पन्न होती है और मल छाँटने वाली वायु अग्नी तत्व की है । ।।८६।।

सिष वाच ।।

हो स्वामीजी इंन्द्रि मुळ दोय अे सांई ।। जळ मळ अहार टळे किम माई ।।
या को भेव क्हो सम जाई ।। बिंद मुत्र बिछड़े किम मांई ।। ८७ ।।

शिष्य ने कहा,कि,हे स्वामीजी,इंद्रिय का छिद्र और मूलद्वार याने गुदा का छिद्र ये दोनो अलग- अलग होकर,दोनों के छिद्र भी,अलग-अलग है,तो इनमें जल(मुत्र)और मल ये दोनों,अलग-अलग होकर,कैसे आते है । इसका भेद मुझे समझा दिजीए और इंद्रियमें से याने लिंग में से मुत्र और वीर्य अलग-अलग कैसे निकलते है । ।।८७।।

श्री सुखो वाच ।।

हे सिष नाभं कंवळ मे सब मिल जावे ।। अन जळ अहार जि क्युँ नर खावे ।।
वां सुंई वो बिछडत हे भाई ।। सो तुज भेव कहुँ समजाई ।। ८८ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले कि है शिष्य जो कुछ भी खाते-पीते है,वह नाभी में याने पेट में मिल जाता है । अन्न और जल या और भी जो आहार लेगा वे पेट में एक ही जगह मिल जाते है । उसका भेद मैं तुम्हे समझाकर बताता हूँ । ।।८८।।

हे सिष नाभी बिच कंवळ हे भाई ।। नाड़या गोड़ सकळ उण मांई ।।
कस कस नाड बाय ले पाया ।। पिछे टळे इसी बिध भाया ।। ८९ ।।

हे शिष्य नाभी में एक कमल है । चारो तरफ की नाड़ीयों की जड़ सब उसी में है । वहाँ से वो नाड़ीयाँ,शरीर में रोम-रोम में,नखों में और आँखो में सभी जगह पहुँचती है । वहाँ का सभी कस नाड़ी-नाड़ी श्वाँस के रूप में चलती है । वह वायु सारे शरीर में नाड़ीयोंसे रस पहुँचाती है और बाद में बचा हुआ मल इस तरह से अलग होता है । ।।८९।।

हे सिष जैसे गत कोलू की जाणो ।। अेसे कंवळ नाँभ सुं ठाणो ।।
वां जठरा अगन सुं पाचे भाई ।। तब झर झर कंवळ भरीजे आई ।। ९० ।।

हे शिष्य जैसे गन्ने का रस निकालने वाले कोल्हू की गती है वैसे ही नाभी कमल में रस निकाला जाता है तब जठराग्नी से,खाये हुए अन्न का पाचन होता है तब उस रस से,रस झर-झर कर कमल भर जाता है बाद में उस रस का रक्त बनता है और रक्त से मांस बनता है । ।।९०।।

हे सिष कस कस सकळ चुसले भाई ।। असं बिंद निर टळ्यो युं मांई ।।
रस कस बाय खेच सब लिया ।। पीछे अहार छोड उण दिया ।। ९१ ।।

हे शिष्य,उसका कस सब नाड़ीयाँ चूस लेती है । ऐसे ही बिन्दू(वीर्य),मांस का भेद और मज्जा बनती है और उससे हड्डी बनती है और हड्डी में से ही वीर्य बनता है इस तरह

से वीर्य अलग हो जाता है और खाये हुए आहार में से पानी अलग होकर उसका मुत्र बनता है । इस प्रकार से शरीर से अलग-अलग हो जाता है । रस और कस तो,वायु से सब खींच लेता है और बाद में बचा हुआ मल बन जाता है ।) ।।९१।।

हे सिष अेसे अहार छंटे मल सोई ।। भिन भिन भेद कहयो में तोई ।।
अब तो कुं मे ठाम बताऊँ ।। बाय वां का निरणा ल्याऊँ ।। ९२ ।।

हे शिष्य इस तरह से आहार में से मल छाँट दिया जाता है जिसका भिन्न-भिन्न भेद,मैंने तुम्हे बताया । अब मैं तुम्हे उसका जगह बताता हूँ । इन निराले-निराले वायु का निर्णय करता हूँ । ।।९२।।

हे सिष निगळण बाय तेज की गाजे ।। कंठ कंवळ के माय बिराजे ।।
थोभण बाय गाल मे भाई ।। चुंसण बाय नाँभ के मांई ।। ९३ ।।

हे शिष्य,निगलने की वायु तेज तत्व की है यह कंठ कमल में रहती है और रोकने वाली वायु गाल में है और चूसने वाली वायू नाभी में है । ।।९३।।

हे सिष मळ कुं खाँच छांट दे भाई ।। वासो बाय नाभ के मांई ।।
थोबण बाय लिंग मुख जाणो ।। वाई बाय गुदा मुख ठाणो ।। ९४ ।।

हे शिष्य मल को खींचकर अलग करने वाली वायु भी नाभी में ही है और रोककर रखने वाली वायु लिंग के मुँख में है और यही रोककर रखने वाली वायु गुदा के मुँख में है ।।।९४।।

सिष वाच ।।

हो स्वामीजी लिंग मुख अेक दोय ना सांई ।। बिंद मुत्र बिछड़े किम मांई ।।
यां को भेव कहो गुर राया ।। केंसे बिंद छुटत इण काया ।। ९५ ।।

शिष्य ने कहा कि हे स्वामीजी लिंग को मुँख तो दो दिखाई नही देते है फिर इस लिंग से,मुत्र और वीर्य अलग-अलग कैसे होते है । गुरूराय,इसका भेद मुझे बताईये । उस शरीर में से वीर्य कैसे छूटता है । ।।९५।।

श्री सुखो वाच ।।

हे सिष बिन्द को बास शिश पर होई ।। मुत्र वास कमर संघ जोई ।।
नाड़ा दोय मुख हे अेकी ।। जेसे सेर पोल बिध पेखी ।। ९६ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने कहा कि हे शिष्य बिन्दू के रहने का स्थान,मस्तक के उपर भृगुटी में है और मुत्र का स्थान कमर के जोड़ पर है । इनकी वीर्य की और मुत्र की,दो अलग-अलग नाड़ीयाँ है परन्तु मुँख एक ही है । जैसे शहर में सरहद को,दरवाजा एक ही होता है । उसमें से,शहर में से सड़क और रास्ते,अलग-अलग आकर एक ही दरवाजे से बाहर निकलते है इसी तरह से मुत्र और वीर्य अलग-अलग नाड़ीयों से आकर एक ही मुँख से,बाहर निकलते है । ।।९६।।

हे सिष मन मंछया म्हेरी चीत्त आवे ।। मथन बाय सो काम चलावे ।।

अेसें बिंद छुटत हे भाई ।। मुत्र कंवळ पुरण व्हे मांई ।। ९७ ।।

हे शिष्य मन में मंछा हुयी और स्त्री चित्त में आयी या स्त्री के उपर चित्त गया और स्त्री से मैथून करने पर वहाँ से याने भृगुटी से काम चलकर आता है । इस तरह से वीर्य छूटता है और मुत्र,जब मुत्र कमल याने मुत्र की थैली पूर्ण भर जाती है तब पिशाब होती है । ।।९७।।

।। इति ग्यान गोष्ट को अंग संपूरण ।।